Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

समकालीन भारतीय चित्रकला में मिथकीय–प्रयोग

प्रो0 अजय कुमार जैटली
विभागाध्यक्ष, दृश्य कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश।
युवराज
शोधार्थी, दृश्य कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4, Issue 1
Page Number : 248-251

Publication Issue :
January-February-2021

Article History
Accepted : 01 Jan 2021
Published : 10 Jan 2021

सारांश : समकालीन भारतीय चित्रकला का बहुत ही विस्तृत क्षेत्र रहा है। इस परम्परा के विकास क्रम एवं विकास प्रक्रियाओं में विभिन्न रूपों को देखा जा सकता है जिसमें समय–समय पर रेखा, रंग, रूप, विषयवस्तुओं आदि में परिवर्तन होता रहा है। भारतीय कला का विकास धार्मिक प्रतीकों, परिवेश, समाज, सौन्दर्यबोध के आधार पर हुआ है। कला के माध्यम से अभिव्यक्ति करना कलाकार का मुख्य लक्ष्य रहा है। मिथक मानव चेतना की रचनात्मक अभिव्यक्ति है। जिसके माध्यम से चित्रकारों ने समाज को नवीन मूल्य प्रदान किये। कलाकारों ने मिथक के अतिभौतिक भाववादी और प्रतीकात्मक तत्वों को ग्रहण कर अपनी आत्माभिव्यक्ति एवं सृजनशीलता के माध्यम से विभिन्न मिथकीय रूपों का निर्माण किया है। समाज में व्याप्त मिथकों से कई कलाकारों ने प्रेरणा ग्रहण की और समकालीन कला में विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण के अनेक आयाम प्रस्तुत किये। उदाहरणार्थ :– राजा रवि वर्मा, अवनीन्द्र नाथ, नन्दलाल बोस, एम0एफ0 हुसैन, जे0 स्वामीनाथन, ए0 रामचन्द्रन आदि प्रमुख कलाकार हैं।

मुख्य शब्द :–समकालीन कला, मिथक, परम्परा, धार्मिक कला।

प्रस्तावना : समकालीन कला का सही अर्थ है समय के साथ या वर्तमान समय की कला, जो कि समय–समय पर बदलती रही है। समकालीन कलाकारों की कला सामग्री, विधियों, अवधारणाओं और विषयवस्तुओं का गतिशील संयोजन है, जो शताब्दियों से चल रही परम्पराओं की सीमाओं को बंधनमुक्त करती है। समकालीन कला सांस्कृतिक संवाद का हिस्सा है जो समुदाय और राष्ट्रीयता की चिंता करता है। समकालीन कलाकार व्यक्ति तथा समाज की भावनाओं को आत्मसात कर गहन खोज में लगा है। वर्तमान में विषय और माध्यम की सीमाएं टूट चुकी हैं। कलाकार सदैव समाज से प्रभवित होता रहा है जिसके फलस्वरूप हम अनेक कला प्रवृत्तियों को देख सकते हैं। कला के अनेक विषय प्राचीन भारतीय मिथक कथानकों से सम्बंधित रहे हैं अतः समकालीन कलाकारों ने प्राचीन मिथकों को आधुनिक संदर्भों में प्रयोग किया है। कलाकार धार्मिक ग्रन्थों, पुराणों, लोककथाओं आदि को भी अपने चित्रण का विषय बनाता रहा है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

मिथक का अर्थ :– प्राचीन कथाओं का वह तत्व जो नवीन स्थितियों में नये अर्थ प्रस्तुत करे, मिथक कहलाता है। मिथक भाव रूप में समाज को प्रभावित करता है, मिथक परिकल्पना पर आधारित होता है जिसका उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ करना होता है।

कलाकारों की कृतियों में मिथक :– भारतीय कला के एक बड़े हिस्से का विकास मिथकों, धार्मिक प्रतीकों के आधार पर हुआ है। ऐसी उत्कृष्ट कला का विकास जिन कलाकारों द्वारा हुआ उनमें परिवेश, समाज, सौन्दर्यबोध, स्वीकार और निषेध के बीच का संघर्ष आदि का प्रभाव रहा है।

भारतीय कला परम्परा समाज और समय के साथ अतीत की कथाओं, अवधारणाओं और मिथकों का प्रतिनिधित्व करती है। चित्रकला परम्परा में मिथकों को अंकित करना हमारे साहित्य एवं कलाओं पर मिथकों के प्रभाव को खोजना है। भारतीय कला के विकास कालक्रम में मिथकों में व्यापक परिवर्तन भी दिखाई पड़ते हैं। 19वीं सदी के कलाकारों के लिये मिथकों का आकर्षण वस्तुतः इसकी अंतरवस्तुओं के व्यक्तिगत रूपांतरण में निहित था। कलाकारों ने मिथक के अतिभौतिक भाववादी और प्रतीकात्मक तत्वों को ग्रहण किया। पौराणिक मिथकों में गणेश और दुर्गा क्रमशः मांगलिकता तथा शक्ति के प्रतीक स्वरूप समाज में आज भी स्वीकार्य हैं। अनेक देवी–देवता प्राकृतिक संदर्भ रूप में प्रयोग किये गये हैं। भारतीय समकालीन कला में राजा रवि वर्मा ऐसे ही कलाकार हैं जिन्होंने अपने चित्रों की विषयवस्तु अनेक पौराणिक कथा–कहानी से ग्रहण की। ये ऐसे प्रथम चित्रकार थे जिन्होंने देवी–देवताओं को साधारण मनुष्यों जैसा चित्रित किया। इन्होंने भारतीय धर्मग्रन्थों, पुराणों, महाकाव्यों के पात्रों, देवी–देवताओं की कल्पना करके हिन्दू मिथकों का प्रभावशाली चित्रण किया जैसे–सरस्वती, लक्ष्मी, उर्वशी–पुरूरवा (चित्र संख्या 'क' देखें), नल–दमयंती, जटायु वध, द्रोपदी चीर हरण आदि पौराणिक कथानकों को इनके चित्रों के रूप में देखा जा सकता है। इन चित्रों की वेशभूषा में इन्होंने दक्षिण भारतीय समाज के वस्त्रों का अंकन किया है।

आधुनिक भारतीय कला में मिथक उत्तरोत्तर रूपांतरित होते गये। मिथक तांत्रिक कला में विशेष रूप से रूपांतरित किये गये। बिन्दु, स्वास्तिक, कमल, सूर्य–चन्द्र, ओम, सर्प, कुंडलिनी, शंख, नेत्र, प्रभामण्डल के अंकन के साथ सांकेतिक रंग योजना का भी चित्रों में प्रयोग किया गया है। इस प्रकार के प्रयोग हम तांत्रिक कलाकारों जैसे–विरेन डे, जी0आर0 संतोष आदि के चित्रों में देख सकते हैं। सृष्टि के प्रति आस्थावान, मंगलकारी दृष्टिकोण ऐसे चित्रण को प्रेरणा प्रदान करती है। संहार की शक्ति के रूप में शिव के मिथकीय स्वरूप का निर्माण किया गया। शक्ति मिथक के रूप में अश्व, वृषभ, गरूड, सिंह जैसे जीवों को भी कलाकारों ने यथास्थान अपनी कृतियों में प्रयोग किया। एम0एफ0 हुसैन के चित्रों में हम अश्वों का अंकन बहुलता से देखते हैं। इसके साथ ही इन्होंने महाभारत श्रृंखला (चित्र संख्या 'ख' देखें) में कई मिथकीय चरित्रों का अंकन किया है।

रामायण, महाभारत के प्रसंग अवतारवाद कला में मानवीय भावों और नैतिक संघर्ष की प्रासंगिकता के साथ प्रस्तुत किये गये हैं। चित्रकार ए0 रामचन्द्रन ने चित्र श्रृंखला 'ययाति' में मिथक का उपयोग अपने विचारों एवं सम्प्रेषण के लिये किया। ययाति के मिथक का विवरण महाभारत के आदिपर्व में है। रामचन्द्रन ने ययाति के 12 पैनलों को तीन भागों में बांटा है, क्रमशः उषा (यौवन), मध्याह्न और संध्या (बुढ़ापा) के माध्यम से जीवन चक्र के अनिवार्य पड़ावों को प्रदर्शित किया है। (चित्र संख्या 'ग' देखें) इसके अतिरिक्त इनके 'द लोट्स पोण्ड', 'सोन्ग आफ ए सिम्बल ट्री', 'अहिल्या इन रेड', 'इनकार्नेशन' (अवतार) जैसे चित्रों में मिथकीय अवधारणाओं को देखा जा सकता है। जे0 स्वामीनाथन ने अतियथार्थवादी प्रवृत्ति को नये अनुभवों से जोड़कर भारतीय कला को एक नई मिथकीय चेतना प्रदान की। इनके पाषाण, पर्वत, पक्षी, रेखा रंगविधान के बीच लयात्मक रूपों से नवीन चित्र भाषा का ज्ञान होता है। मनुष्य और यंत्र के सहसम्बंधों से विकसित

असाधारण कल्पनाएं नये मिथकों को जन्म दे रही हैं। अति यथार्थवादी कला में इनके रूप विशेषतः परिलक्षित होते हैं।

के0जी सुब्रमण्यम का चित्र 'गोलपारा की देवी' (चित्र संख्या 'घ' देखें) में चतुर्भुज देवी को महिषासुर को खदेड़ते चित्रित किया गया है। प्रभाकर बर्वे का चित्र 'ब्लू लेक' (चित्र संख्या 'च' देखें) पराभौतिक आयाम को प्रस्तुत करता है। गुजरात की चित्रकार माधवी पारेख के चित्रों में गुजराती लोक एवं जनजातीय मिथकों को देखा जा सकता है। गोगी सरोजपाल के चित्रों में पुरुष प्रधान समाज में महिला की संरचना के व्यक्तिगत मिथक की अभिव्यक्ति है। (चित्र संख्या 'छ' देखें), इसके अतिरिक्त गणेश पाइन, जोगेन चौधरी, तैयब महता, मंजीत बावा आदि चित्रकारों की कृतियों में भी मिथकीय तत्व परिलक्षित होते हैं।

निष्कर्ष : कलाकारों ने अपनी कृतियों में सभ्यता व संस्कृति का निरूपण करने के लिए मिथकीय मूल्यों का नवीनीकरण करके सामाजिक व्यवस्था को मजबूत करने का कार्य किया है। अपनी कृतियों में मिथकों का विभिन्न संदर्भों में प्रयोग किया है, यथा–मनुष्य को अराजकता से बचाना, मानव समाज की अस्मिता को बनाये रखने के लिए, भाव विरेचन करने तथा सृजनात्मक क्षमता का विकास करने के लिए समकालीन कलाकारों ने मिथक या मिथकीय तत्वों का प्रयोग कर अपनी कलाकृतियों में अभिव्यक्ति को नये आयाम प्रदान किये। मिथकों का उपयोग करके कलाकारों ने अपने उदात्त विचारों की प्रतिस्थापना कर अपनी कृतियों के माध्यम से समाज को व्यवस्थित करने का कार्य किया।

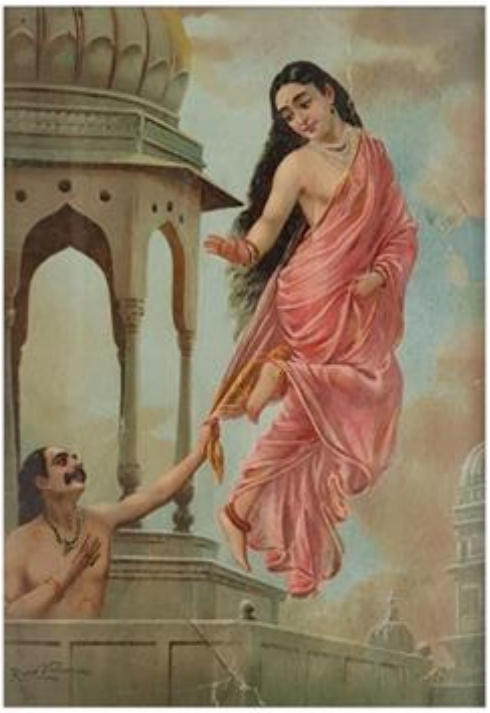

(क) उर्वशी - पुरूरवा - राजा रवि वर्मा

(ख) महाभारत श्रृंखला - एम. एफ. हुसैन

(घ) गोलपारा की देवी - के. जी. सुब्रमण्यम

(ग) ययाति (ऊषा, मध्याह्न, संध्या) - ए. रामचन्द्रन

(च) ब्लू लेक - प्रभाकर बर्वे

(छ) हटयोगिनी नायिका - गोगी सरोज पाल

संदर्भ ग्रन्थ :

1. मांगो प्राणनाथ, भारत की समकालीन कला : एक परिप्रेक्ष्य– नेशनल बुक ट्रस्ट 2012, पृष्ठ सं0– 7 से 11
2. चतुर्वेदी डॉ0 ममता, समकालीन भारतीय चित्रकला : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, छठा संस्करण; 2016, पृष्ठ सं0– 1 से 7
3. अग्रवाल डॉ0 गिरिराज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला : संजय पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ सं0– 213
4. सिंह नामवर, कार्ल मार्क्स : कला और साहित्य चिंतन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–2018 पृष्ठ सं0– 76 से 77
5. भौमिक अशोक, समकालीन भारतीय चित्रकला हुसैन के बहाने : अंकिता प्रकाशन।
6. भारद्वाज विनोद, वृहद आधुनिक कलाकोष, वाणी प्रकाशन 2015 पृष्ठ सं0– 134 से 135
7. सिंह वीरेन्द्र, मिथक दर्शन का विकास : स्मृति प्रकाशन।
8. गुप्त जगदीश, समकालीन कला, आधुनिक कला में मिथक चेतना, पृष्ठ सं0– 013, अंक 5, नवम्बर 1985
9. जोशी प्रभु, राजा रवि वर्मा का कला संसार, अभिव्यक्ति, कला संवाद, 23 अगस्त 2010
10. वर्मा निर्मल, कला का जोखिम, 2018, पृष्ठ सं0– 17
11. सिंह के. विक्रम, कुछ गमे– दौरा, वाणी प्रकाशन, 2014, पृष्ठ सं0– 53
12. चन्द्रिकेश जगदीश, पुराणकालीन रूपंकर कलाएँ, पुराण साहित्य में चित्र, मूर्ति और वास्तु का अनुशीलन एवं समसामयिक कला– परम्परा का संदर्भ, अनन्य प्रकाशन दिल्ली 2010